IJAMSR

International Conference on Latest Trends in Engineering, Management, Humanities, Science & Technology (ICLTEMHST -2022)
27th November, 2022, Guwahati, Assam, India.

CERTIFICATE NO : ICLTEMHST /2022/C1122984

भारतीय परिप्रेक्ष्य से पर्यावरण का दर्शन का एक अध्ययन

KIMMI

Research Scholar, Ph. D in Philosophy
Mansarovar Global University, Bilkisganj, M.P.

सारांश

भारतीय दर्शन पर्यावरण को दो दृष्टिकोण से देखता है; प्राकृतिक एवं मानव निर्मित पर्यावरण। लेकिन भारतीय दर्शन की मुख्य चिंता प्राकृतिक पर्यावरण पर है। भारतीय दर्शन पर्यावरण को एक प्रदत्त इकाई के रूप में व्याख्यायित करता है। भारतीय दार्शनिकों के अनुसार सभी प्रकार के जीवों में जीवन है चाहे वह जैविक हो या अजैविक। भारतीय संदर्भ में जीवित और निर्जीव संस्थाओं के बीच पारस्परिक निर्भरता पर अधिक जोर दिया गया है। उनका मानना है कि जीवित जीव के लिए अन्य सांसारिक वस्तुओं जैसे पौधों, जानवरों आदि पर निर्भर हुए बिना अकेले रहना असंभव है। भारतीय दर्शन पर्यावरण को एक अनुकूल निवास स्थान मानता है। ऐसे कई उदाहरण हैं जिनका वेदों और उपनिषदों में विस्तार से वर्णन किया गया है जहां जंगल को स्वस्थ जीवन जीने के लिए सबसे शुद्ध स्थान माना जाता है। यह देखना अधिक महत्वपूर्ण है कि भारतीय दार्शनिकों का ध्यान केवल पर्यावरण की व्याख्या करने, या जीवित और निर्जीव प्राणियों के बीच पारस्परिक संबंध का एहसास करने, या जीवन के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक स्वस्थ रहने योग्य स्थान या एक अनुकूल स्थान के रूप में नहीं था। पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए लेकिन पर्यावरण के संरक्षण के बारे में एहसास करने के लिए। भारतीय दार्शनिक का मानना है कि यदि कोई दिए गए पर्यावरण के साथ सामंजस्य बनाए रखता है तो प्रकृति हर किसी की ज़रूरत को पूरा कर सकती है। उन्होंने पर्यावरण की स्थिरता के बारे में बहुत साल पहले सोचा था। पर्यावरण के संबंध में उनकी सच्ची और अंतिम दृष्टि है कि प्राणियों के बीच सहज संबंध है और यह केवल आनंद लेने और आश्रय पाने की वस्तु नहीं है। भारतीय दर्शन के जैन और बौद्ध विद्यालयों में इस संबंध में गहन चर्चा हुई है। उन्होंने मनुष्य और पर्यावरण के अन्य तत्वों को समान महत्व दिया। संक्षेप में कहें तो पर्यावरण के संबंध में भारतीय दर्शन का मुख्य बिंदु कुछ हद तक आध्यात्मिक और पारलौकिक है।